M.J.M.C Part 2

Paper --- 15 Communication Research

Topic --- Interview

Prepared by---Dr. Kavita Raj,V.Faculty, Public Administration, A.N.College,Patna,

किसी भी विज्ञान का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अनुसंधान की विधियां तथा तथ्य संकलन के साधन कितने विकसित हैं ।प्राकृतिक विज्ञान में शोध की विधियां सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा अधिक विकसित है ।सामाजिक अनुसंधान में अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है, जैसे- अवलोकन, अनुसूची ,प्रश्नावली , पुस्तकालय पद्धति, अनुमापन समाजमिति ,साक्षात्कार ,गुरुजनों से परामर्श के रूप में।

साक्षात्कार तथ्य संकलन (data collection)की ऐसी विधि है ,जिसमें शोधकर्ता साक्षात्कारकर्ता के रूप में सूचनादाताओं से कुछ आवश्यक प्रश्न पूछता है। यहक्षमौलिक रूप से सामाजिक अंतर क्रिया की एक प्रक्रिया है ,जिसमें प्रश्न करता और उत्तर दाता आमने-सामने होते हैं।

विद्वानों ने साक्षात्कार की परिभाषाएं निम्नलिखित रूप में दी है ---

पी0 वी0 यंग के अनुसार, साक्षात्कार एक व्यवस्थित विधि है जिसके द्वारा एक व्यक्ति व्यक्ति के आंतरिक जीवन में अधिक या अधिक या कम कल्पनात्मक रूप में प्रवेश करता है।

वी एम पामर के अनुसार, साक्षात्कार दो व्यक्तियों के बीच सामाजिक परिस्थिति है जिसने मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के लिए दोनों व्यक्ति पारस्परिक प्रत्युत्तर करते हैं ।

चैपलिन के अनुसार ,साक्षात्कार आमने-सामने होने वाला वार्तालाप है, जिसका उद्देश्य पूर्व सूचना प्राप्त करना होता है।

एम एन बसु साक्षात्कारकर्ता को व्यक्तियों के आमने-सामने किसी बिंदु पर मिलने के रूप में परिभाषित करते हैं।

उपरोक्त परिभाषा ओं के विश्लेषण से साक्षात्कार की कुछ विशेषताएं परिलक्षित है जो निम्न वत है----

यह अनुसंधान का एक ऐसा उपकरण है जिसका व्यवहार शोधकर्ता डाटा कलेक्शन (data collection) के लिए करता है।

##साक्षात्कार का उद्देश्य करना है

##यह एक वार्तालाप है जिसमें आवश्यक प्रश्न शोधकर्ता द्वारा पूछे जाते हैं ,जिसका जवाब साक्षात्कार देने वाला देता है।

यहआमने सामने होने वाला वार्तालाप है ।

##साक्षात्कार की एक विशेषता है जिसमें प्रश्नकर्ता तथा उत्तर कर्ता कि निश्चित भूमिकाएं, समय तथा expectations होती है जिसके अनुकूल व्यवहार करते हैं।

इस तथ्य संकलन की अन्य विधियों से साक्षात्कार की विधियां महत्वपूर्ण और भिन्न मानी जाती है।

साक्षात्कार के प्रकार---

साक्षात्कार का वर्गीकरण हम कई आधारों पर कर सकते हैं जैसे-- उद्देश्य, संरचना, औपचारिकता, उत्तर दाताओं की संख्या ,अध्ययन पद्धति इत्यादि।

इसे निम्नलिखित बिंदुओं से

समझते हैं:--

उद्देश्य कार्यों के आधार पर

क) निदानात्मक साक्षात्कार (diagnostic)--

इसमें किसी भी समस्या के सामान्य कारणों की खोज करना होता है। इसके अंतर्गत गरीबी, भ्रष्टाचार ,बेकारी आदि सोशल प्रॉब्लम्स पर प्रश्न किया जाता है। इसमें इंटरव्यू(survey method) के आधार पर किया जाता है।

(ख) उपचार साक्षात्कार (treatment)--

इस विधि में किसी समस्या के समाधान या उपचार को खोजने का प्रयास किया जाता है। एक प्रकार से निदानात्मक साक्षात्कार के प्रश्नों का हल ट्रीटमेंट इंटरव्यू में होता है। यह विभिन्न समस्याओं को दूर करने की विधि है।

(ग) अनुसंधान साक्षात्कार(research)।

अनुसंधान साक्षात्कार के द्वारा सामाजिक समस्याओं को समझने उनके विषय में जानने, उनके कारण को दूर करने के उपाय जानने का व्यवहारिक और सैद्धांतिक अध्ययन किया जाता है। इसकी सहायता से व्यक्ति के मनोभावों अभिवृत्तियों आदि का भी अध्ययन किया जाता है।

संरचना के आधार पर

(क) संरचित साक्षात्कार --यह संरचित, नियंत्रित तथा standardized भी कहे जाते हैं इसमें समस्या के आधार पर प्रश्नों की रचना कर ली जाती है ।प्रश्न स्वतंत्र तथा नियंत्रित दोनों प्रकार के होते हैं ।साक्षात्कार लेते समय प्रश्नों में से किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। इस कारण कभी-कभी कठिनाई का भी सामना करना पड़ता है ।सभी प्रकार के अध्ययन में इसका प्रयोग नहीं किया जाता ।

असंरचित साक्षात्कार :--यह स्वतंत्र कहानी की तरह होते हैं। साक्षात्कार करता केवल संकेत देता है तथा

सूचनादाता उसके संबंध में विस्तृत उत्तर देता है।
इनमें कोई भी प्रश्न निश्चित नहीं रहता है ।

इसके तीनप्रकार है --

@अनिर्देशित साक्षात्कार-इस प्रकार के साक्षात्कार में कोई भी पूर्व योजना या साक्षात्कार की संरचना पूर्व निर्धारित नहीं होती है अध्ययन समस्या के अनुसार प्रश्न पूछा जाता है तथा उत्तर दाता की मनोभावों के आधार पर प्रश्न बनता जाता है।इसमें उत्तर दाता भी जवाब देने के लिए स्वतंत्र होता है।

#गहन साक्षात्कार-- गहन साक्षात्कार के द्वारा समस्या को प्रारंभ से अंत तक समझने का प्रयास किया जाता है , "अमुक व्यवहार के मुख्य कारण क्या है?", का विस्तृत अध्ययन किया जाता है एक प्रकार से या एक ही प्रश्न के इर्द-गिर्द घूमता रहता है।

नैदानिक साक्षात्कार --यह साक्षात्कार अनिर्देशित तथा गहन साक्षात्कार की तरह है ,क्योंकि इसकी प्रक्रिया में भी नियंत्रण की अपेक्षा स्वतंत्रता अधिक रहती है। नैदानिक साक्षात्कार में कारणों को दूर करने का प्रयास तथा उपाय खोजने का प्रयास किया जाता है ।इसमें उत्तर दाता भी पूर्ण सहयोग देता है।

(ग) अर्धसंरचित या केंद्रित साक्षात्कार विषय से संबंधित ऐसा साक्षात्कार है जिसमें संबंधित व्यक्तियों से ही इंटरव्यू ली जाती है । इसमें उत्तरदाता अपने आत्मपरक अनुभव ,भाव अभिवृत्तिओं तथा आंकड़े आदि को शामिल करता है। इसमें व्यक्तिगत संपर्क का महत्व होता है।इस पद्धति में विश्वसनीयता तथा वैधता के गलत होने का भय भी होता है।

औपचारिकता के आधार पर

(की) औपचारिक साक्षात्कार इसमें प्रश्नों की कड़ी नियंत्रित होती है ।प्रश्न कर्ता इसमें फेरबदल नहीं कर सकता है ।

(ख)अनौपचारिक साक्षात्कार-- इसमें प्रश्न कर्ता को प्रश्नों को मरोड़ने की स्वतंत्रता होती है।

उत्तरदाताओं की संख्याओं के आधार पर--

(क) व्यक्तिगत साक्षात्कार --इसमें हर व्यक्ति से अलग-अलग इंटरव्यू ली जाती है ।साक्षात्कार कर्ता एक के बाद दूसरा प्रश्न पूछता है और उत्तरदाता बारी-बारी से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देता है । प्रत्येक उत्तर अगले प्रश्न के लिए प्रश्नकर्ता को प्रेरणा देता है।

भी होता है।

औपचारिकता के आधार पर

(की) औपचारिक साक्षात्कार इसमें प्रश्नों की कड़ी नियंत्रित होती है ।प्रश्न कर्ता इसमें फेरबदल नहीं कर सकता है ।

(ख)अनौपचारिक साक्षात्कार-- इसमें प्रश्न कर्ता को प्रश्नों को मरोड़ने की स्वतंत्रता होती है।

उत्तरदाताओं संख्याओं के आधार पर

(क(व्यक्तिगत साक्षात्कार-- इसमें हर व्यक्ति से अलग-अलग इंटरव्यू ली जाती है ।साक्षात्कार कर्ता

एक के बाद दूसरा प्रश्न पूछता है और उत्तरदाता बारी बारी से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देता है । प्रत्येक उत्तर प्रश्न कर्ता को प्रेरणा देता है।

यह शुद्ध उत्तर प्राप्त करने की उत्तम विधि है।

(ख)सामूहिक साक्षात्कार --यह एक ही समय में एक से अधिक व्यक्तियों से लिया जाने वाला साक्षात्कार है ।इसमें स्थान निर्धारित रहते हैं । यह धन और समय की बचत करने तथा बड़ी संख्या में तथ्य संकलन का तरीका है। किंतु विश्वसनीयता और सत्यता का इसमें अभाव रहता है।

संपर्क के आधार पर

(क)अल्पकालीन साक्षात्कार:- casual इंटरव्यू है। इस प्रकार के इंटरव्यू रेलवे, बस ,सिनेमाघरों,मेलों आदि पर होते हैं ।यह केवल मुख्य प्रश्न के इर्द-गिर्द घूमता रहता है।

(ख) दीर्घकालीन साक्षात्कार-- इसमें समस्या के पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। इसमें बार-बार इंटरव्यू भी लिया जाता है ।

(ख)आवर्तिपूर्ण साक्षात्कार-- कभी-कभी सामाजिक समस्या का अध्ययन करते समय यह आवश्यकता होती है कि समय समय पर इसका अध्ययन किया

जाए। ऐसी परिस्थिति में लिया जाने वाला साक्षात्कार repetative इंटरव्यू कहा जाता है।